Notes By → Dr KUMARI HANSU
H.O.D.
DEPTT OF ECONOMICS
R.N. COLLEGE HAJIPUR

Topic – Labour Market

Ques: Discuss Nature and characteristics of Labour Market in India.

(श्रम बाजार के लक्षण एवं स्वरूप बताइये भारतीय श्रम के बाजार की विशेषताएं बताइये)

Ans: "श्रम के बाजार" शब्द का कुछ लोग विरोध करते हैं, क्योंकि इस शब्द से यह ध्वनि निकलती है कि श्रम भी एक वस्तु है। थॉडर ने इस आपत्ति का उत्तर देते हुए कहा है कि "इस प्रकार की आपत्तियाँ कोरी जनता की अपील भावुकता और राजनैतिक पक्षपात को ही प्रमाणित करती हैं वास्तव तो यह है कि श्रम का क्रय-विक्रय होता है अतः उसका बाजार होता है।

श्रम के बाजार की अलग से परिभाषा देने की आवश्यकता नहीं है वह बाजार जहाँ श्रम का क्रय-विक्रय होता है श्रम का बाजार है। सामान्य अर्थ में बाजार उस स्थान को कहते हैं जहाँ क्रेता-विक्रेता स्वतंत्र होते हैं, श्रम के लिए यह परिभाषा उचित नहीं है। श्रम की इस प्रकार की मंडी या बाजार बहुधा नहीं होता प्रश्न है श्रम के मामले में बाजार की कौन सी परिभाषा उपयुक्त रहेगी? सामान्यतः हमारे सामने समस्या यह है कि श्रम के बाजार का प्रत्यानय क्या है? क्रेता-विक्रेता के समूह अथवा एक स्थान अथवा क्षेत्र।

श्रम बाजार किसी मंडी की तरह भी हो सकता है कि मजदूर किसी जगह पर एकत्र हो और वहाँ से प्रतिदिन काम के स्थान पर ले जाया जाए, परन्तु औद्योगिक श्रम में ऐसा अपवाद स्वरूप ही हो सकता है। उद्योगपति श्रम के क्रेता और मजदूर श्रम का विक्रेता - श्रम के बाजार के लिए दोनों का होना आवश्यक है। परन्तु अधिक महत्त्वपूर्ण वस्तु क्षेत्र है जो केवल श्रम के बाजार के लिए क्षेत्र एक आवश्यक आधार है कुछ लोगों ने इसे अनावश्यक बताया है परन्तु ऐसा कहना उचित नहीं है।

एली की परिभाषा श्रम बाजार के लिए सबसे उपयुक्त जान पड़ता है, यथा एली के अनुसार "वह सामान्य क्षेत्र बाजार है जिसमें किसी वस्तु की कीमत निर्धारित करने वाली शक्तियाँ कार्य करती हैं"; (Market means a general field within which forces determining the price of a commodity operate") विदेशी विद्वानों ने श्रम के बाजार की कुछ परिभाषाएं दी हैं यथा:

संयुक्त राज्य के रोजगार सेवा संगठन के अनुसार "श्रम का बाजार वह स्थान है जिसके अन्दर रोजगार की क्रियाओं को प्रभावित करने वाली क्रियाओं को प्रभावित करने वाली शक्तियाँ काम करती हैं, इस स्थान पर उद्योगपति अपने कर्मचारियों को भर्ती करते हैं और कर्मचारी काम तलाश करते हैं, यह एक सामान्य क्षेत्र है जिसमें श्रम की माँग और पूर्ति मजदूरी के अन्तर काम के घंटे या परिवर्तन, भर्ती और काम की दशा, उद्योगपति और श्रमिक के सम्बन्धों का निर्माण होता है।" कैरोल ने बाजार क्षेत्र और बाजार में अन्तर किया है "बाजार क्षेत्र" वह भौगोलिक प्रदेश है जिसमें एक शहर या अनेकों शहरों का केन्द्र होता है और आस-पास का ग्रामीण क्षेत्र होता है जिसके औद्योगिक काम किए जाते हैं जहाँ पर मजदूर बिना अपना निवास-स्थान बदले काम बदल सकते हैं।" उपर्युक्त परिभाषा एली के परिभाषा से ही मिलता-जुलता है किन्तु एली की परिभाषा अधिक स्पष्ट और सरल है बाजार तथा 'बाजार क्षेत्र'

Scanned with CamScanner

~~यह भौगोलिक प्रदेश है जिसके एक भाग या अनेकों~~ का भाग, सैद्धान्तिक एवं शास्त्रीय दृष्टि से आवश्यक है परिभाषा के अनुसार बाजार स्वयं एक क्षेत्र है किन्तु एक अन्य योग का होना आवश्यक है किन्तु यह परिभाषा आधुनिक भी है सैद्धान्तिक नहीं है।

श्रम बाजार के भेद : श्रम के बाजार का वर्गीकरण श्रम के वर्गीकरण के आधार पर किया जा सकता है और उद्योगों के आधार पर भी किया जा सकता है सामान्यतः श्रम बाजार के निम्नलिखित भेद हैं:

(1) औद्योगिक श्रम बाजार: इसमें कारखानों में काम करने वाले मजदूरों के श्रम का विक्रय होता है

(2) कृषि श्रम का बाजार: खेती में लगे हुए श्रमिकों का श्रम विक्रय जिस क्षेत्र में हो उसे कृषि श्रम का बाजार कहना चाहिए

(3) सफेद वस्त्र श्रम (White Collar Labour): सफेद-वस्त्र श्रम का बाजार जिसमें केवल पढ़े-लिखे दफ्तरी श्रमिकों का विक्रय होता है

(4) अकुशल श्रम का बाजार: श्रम श्रेणी के अन्तर्गत किसी भी प्रकार के अशिक्षित श्रमिक का श्रम विक्रय होता है।

(5) कुशल तथा प्रशिक्षित श्रम का बाजार: कारीगर और कुशल श्रमिक इस वर्ग में आते हैं।

संयुक्त राज्य के रोजगार विभाग ने श्रम बाजार का विभाजन इस प्रकार से किया जो निम्न हैं:

(1) श्रम का औद्योगिक बाजार

(2) श्रम का व्यावसायिक बाजार

(3) श्रम का भौगोलिक बाजार

(4) इस विभाग द्वारा प्रकाशित एक पुस्तक में कहा गया है कि "श्रम बाजार को तीन विस्तृत वर्गों में विभाजित किया जा सकता है औद्योगिक, व्यावसायिक तथा भौगोलिक। रोजगार के अवसर बहुधा विशेष प्रकार के व्यवसायों और औद्योगिक कार्यों में केन्द्रित रहते हैं - अतः सामान्यतः एक भौगोलिक क्षेत्र में अनेकों प्रकार के परस्पर सम्बन्धित व्यावसायिक और औद्योगिक बाजार होते हैं।"

सैद्धान्तिक वर्गीकरण:

उपरोक्त विभाजन व्यावहारिक है सिद्धान्त के विवेचन के लिए श्रम के बाजार के दो भेद हैं -

(1) संगठित श्रम बाजार: जब श्रमिक संगठित होकर कार्य करते रहते हैं। उस समय श्रम का मूल्य अथवा मजदूरी की दर दूसरे प्रकार से निश्चित होती है। अब केवल यही नहीं श्रम की मांग, पूर्ति आदि पर श्रम के संगठनों का प्रभाव है। संगठित बाजार में भी मजदूरी के निर्धारण पर लोग मजदूरी का आधुनिक सिद्धान्त, संगठित बाजार में भी मजदूरी के निर्धारण का अध्ययन करते हैं। ऐसी परिस्थिति में आर्थिक नियम दूसरे ही प्रकार से अपना प्रभाव डालते हैं।

(2) असंगठित बाजार - यह शुद्ध अर्थव्यवस्था की स्थिति है जिसमें मजदूर संगठित नहीं होते और मजदूरी का निर्धारण काफी हद तक मांग और पूर्ति आदि से होती है। आजकल इस परिस्थिति कम पायी जाती है क्योंकि अधिकांश उद्योगों में मजदूर संगठित हो चुके हैं, परन्तु छोटे उद्योगों तथा कृषि क्षेत्र में अभी भी असंगठित होता है। इस स्थिति में आर्थिक शक्तियां दूसरे प्रकार से कार्य करती हैं।

भारतीय श्रम बाजार -

भारतीय श्रम बाजार अधिकांशतः विकसित देशों के श्रम बाजार से भिन्न है। इस बाजार की निम्नलिखित विशेषताएं हैं →

(1) विशालता: श्रम की पूर्ति की दृष्टि से भारतीय श्रम बाजार संसार में चीन के बाद सबसे विशाल है, इस देश में अपार जन शक्ति है जनसंख्या के

Scanned with CamScanner

विशालता के कारण तथा निर्धनता के कारण भी श्रम की अह पूर्ति मांग से अधिक होती है अतः मजदूरी की दरें नीची रहती हैं और देश में बेकारी की समस्या उत्पन्न बनी रहती है

(2) कुशल मजदूरों का अभाव: इसकी विशेषता यह है कि श्रम बाजार में अकुशल श्रमिकों की बहुलता है तथा कुशल श्रमिकों का अभाव है इसका परिणाम है कि एक तरफ तो बेकारी की समस्या है और दूसरी तरफ कुछ विशेष प्रशिक्षित कारीगर या श्रमिक मिलते ही नहीं हैं

(3) गतिशीलता की कमी - भारतीय श्रम की एक विशेषता यह है कि वह एक स्थान से दूसरे स्थान को सरलता से नहीं जाता है इसका कारण निर्धनता तथा रूढ़िवादिता तथा यातायात के साधनों का अभाव है

(4) संगठन का अभाव - भारतीय मजदूरों का अभाव संगठन अभी संतोषजनक नहीं है कुछ संगठित उद्योगों, जैसे लोहा, कपड़ा, शक्कर आदि में जरूर संगठित हैं परन्तु अन्य उद्योगों में बहुत सी कमजोरियां हैं इसकी बात यह है कि लघु उद्योगों और खेती में मजदूरों का संगठन नहीं के बराबर है मजदूरी इत्यादि के सिद्धांतों को भारतीय श्रम के बाजारों में लागू करने में इन तथ्यों को सदैव ध्यान रखना पड़ता है क्योंकि अधिकांश सिद्धांत असंगठित श्रम बाजार में ही लागू होते हैं यद्यपि कुछ संगठित बाजार के भी सिद्धांत हैं

(5) नियंत्रण के अभाव: श्रम के बाजार एक कमी नियमों की है संगठित उद्योगों के कुछ नियम हैं, उदाहरणार्थ मजदूरी का भुगतान, सर्विस, सामाजिक सुरक्षा आदि के सम्बन्ध में नियम बनाए गए हैं परन्तु देश की अधिकांश श्रम-शक्ति अभी भी नियमों के क्षेत्र से बाहर है (उदाहरणार्थ - खेतीहर मजदूरों को नियम के बराबर है)

Scanned with CamScanner